International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी और चुनौतियाँ

Shivpujan Goswami

NET - Political Science
Address - Goswami Colony, Baseri Dholpur

सारांश (Abstract)

भारत विश्व का सबसे युवा देश माना जाता है, जहाँ लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि वे सामाजिक परिवर्तन, राजनीतिक जागरूकता तथा राष्ट्रीय विकास के प्रमुख वाहक होते हैं। भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी समय के साथ बढ़ी है, विशेषकर सूचना प्रौद्योगिकी, सोशल मीडिया तथा शिक्षा के विस्तार के कारण। इसके बावजूद राजनीतिक उदासीनता, आर्थिक असमानता, वंशवाद, भ्रष्टाचार, राजनीतिक हिंसा तथा अवसरों की कमी जैसी अनेक चुनौतियाँ युवाओं की सक्रिय राजनीतिक भागीदारी को प्रभावित करती हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में भारतीय राजनीति में युवाओं की भूमिका, उनकी भागीदारी के विभिन्न आयामों तथा उनके समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि यदि युवाओं को उचित राजनीतिक प्रशिक्षण, नेतृत्व के अवसर तथा लोकतांत्रिक मूल्यों से युक्त वातावरण प्रदान किया जाए तो वे भारतीय लोकतंत्र को अधिक सशक्त और उत्तरदायी बना सकते हैं।

मुख्य शब्द: युवा, राजनीति, लोकतंत्र, राजनीतिक सहभागिता, नेतृत्व, सोशल मीडिया, चुनाव।

1. प्रस्तावना

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र है, जहाँ लोकतंत्र की सफलता नागरिकों की सक्रिय भागीदारी पर निर्भर करती है। लोकतांत्रिक व्यवस्था केवल मतदान तक सीमित नहीं होती, बल्कि इसमें नीति-निर्माण, जनमत निर्माण, सामाजिक आंदोलनों, राजनीतिक विमर्श तथा शासन-प्रशासन की प्रक्रियाओं में नागरिकों की सहभागिता भी शामिल होती है। इस संदर्भ में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है क्योंकि युवा वर्ग किसी भी राष्ट्र की ऊर्जा, सृजनात्मकता, नवाचार क्षमता तथा परिवर्तनकारी चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। भारत जैसे विकासशील देश में, जहाँ जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा युवा है, वहाँ राजनीतिक प्रक्रियाओं में युवाओं की भागीदारी लोकतंत्र की मजबूती और राष्ट्रीय विकास के लिए अनिवार्य हो जाती है।

भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी का इतिहास अत्यंत गौरवशाली रहा है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अनेक युवा क्रांतिकारियों और नेताओं ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। भगत सिंह, चन्द्रशेखर आज़ाद तथा सुभाष चन्द्र बोस जैसे युवाओं ने राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हुए स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा प्रदान की। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी युवाओं ने विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक एवं लोकतांत्रिक आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई। चाहे वह छात्र आंदोलन हों, भ्रष्टाचार विरोधी अभियान हों अथवा सामाजिक न्याय और समानता के लिए चलाए गए संघर्ष, युवाओं ने सदैव परिवर्तन के अग्रदूत के रूप में कार्य किया है।

वर्तमान समय में वैश्वीकरण, उदारीकरण तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विस्तार ने राजनीतिक सहभागिता के स्वरूप को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इंटरनेट, डिजिटल मीडिया तथा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के माध्यम से युवा वर्ग राजनीतिक घटनाओं, सरकारी नीतियों और समसामयिक मुद्दों के प्रति पहले की अपेक्षा अधिक जागरूक हुआ है। सोशल मीडिया ने युवाओं को अपनी राजनीतिक राय व्यक्त करने, जनमत निर्माण करने, राजनीतिक अभियानों में भाग लेने तथा जनहित के मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर पर उठाने का अवसर प्रदान किया है। इसके परिणामस्वरूप राजनीतिक सहभागिता के पारंपरिक साधनों के साथ-साथ डिजिटल राजनीतिक भागीदारी का एक नया आयाम विकसित हुआ है।

भारत में 18 से 35 वर्ष आयु वर्ग की जनसंख्या का अनुपात अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह वर्ग न केवल देश की कार्यशील जनसंख्या का बड़ा हिस्सा है, बल्कि भविष्य के राजनीतिक नेतृत्व का भी आधार है। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में युवाओं की भागीदारी से नई सोच, नवीन नीतियों और विकासोन्मुख दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलता है। युवा शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, लैंगिक समानता, डिजिटल अधिकार और सामाजिक न्याय जैसे मुद्दों को राजनीतिक विमर्श के केंद्र में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इसके बावजूद भारतीय राजनीति में युवाओं की प्रभावी भागीदारी के समक्ष अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। राजनीतिक दलों में वंशवाद और परिवारवाद, चुनावी राजनीति में धनबल और बाहुबल का प्रभाव, बेरोजगारी, राजनीतिक शिक्षा का अभाव, राजनीतिक उदासीनता तथा निर्णय निर्माण प्रक्रियाओं में सीमित प्रतिनिधित्व जैसी समस्याएँ युवाओं की राजनीतिक सक्रियता को प्रभावित करती हैं। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया पर फैलने वाली भ्रामक सूचनाएँ, दुष्प्रचार और राजनीतिक ध्रुवीकरण भी युवाओं की राजनीतिक समझ और सहभागिता को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक बनकर उभरे हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक हो गया है कि युवाओं की राजनीतिक भागीदारी को केवल मतदाता के रूप में नहीं, बल्कि नीति-निर्माता, जनप्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता और लोकतांत्रिक परिवर्तन के सक्रिय भागीदार के रूप में देखा जाए। लोकतंत्र की गुणवत्ता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें युवा वर्ग को कितनी प्रभावी भूमिका प्रदान की जाती है। यदि युवाओं को पर्याप्त अवसर, नेतृत्व प्रशिक्षण, राजनीतिक शिक्षा और लोकतांत्रिक मंच उपलब्ध कराए जाएँ, तो वे भारतीय राजनीति को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी, समावेशी और विकासोन्मुख बना सकते हैं।

इन्हीं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी के विभिन्न आयामों, उनके योगदान, राजनीतिक चेतना, लोकतांत्रिक भूमिका तथा उनके समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। साथ ही युवाओं की राजनीतिक सहभागिता को अधिक प्रभावी बनाने हेतु आवश्यक सुझावों पर भी विचार किया गया है, जिससे भारतीय लोकतंत्र को और अधिक सशक्त एवं जनोन्मुख बनाया जा सके।

2. भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी के स्वरूप

भारतीय लोकतंत्र में युवाओं की राजनीतिक भागीदारी अनेक रूपों में दिखाई देती है। यह भागीदारी केवल चुनावों में मतदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि राजनीतिक दलों की गतिविधियों, छात्र संगठनों, सामाजिक आंदोलनों, नीति-निर्माण प्रक्रियाओं तथा डिजिटल मंचों पर सक्रिय उपस्थिति के रूप में भी परिलक्षित होती है। बदलते सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवेश ने युवाओं की राजनीतिक सहभागिता के नए आयाम विकसित किए हैं। आज का युवा केवल राजनीतिक घटनाओं का दर्शक नहीं है, बल्कि वह राजनीतिक प्रक्रियाओं का सक्रिय भागीदार बनकर लोकतांत्रिक व्यवस्था को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

मतदान में भागीदारी: मतदान लोकतांत्रिक भागीदारी का सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावी माध्यम माना जाता है। भारतीय संविधान प्रत्येक वयस्क नागरिक को मतदान का अधिकार प्रदान करता है, जिसके माध्यम से वह शासन की दिशा निर्धारित करने में योगदान देता है। हाल के वर्षों में युवा मतदाताओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिससे चुनावी राजनीति में युवाओं का महत्व और अधिक बढ़ गया है। चुनाव आयोग द्वारा मतदाता जागरूकता अभियान, डिजिटल पंजीकरण सुविधाएँ तथा विभिन्न जनसंपर्क कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं को मतदान के लिए प्रेरित किया जा रहा है। युवा मतदाता विकास, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सुशासन जैसे मुद्दों को ध्यान में रखते हुए अपने मताधिकार का प्रयोग कर रहे हैं, जिससे राजनीतिक दलों को भी युवाओं की अपेक्षाओं के अनुरूप नीतियाँ बनाने के लिए प्रेरित होना पड़ रहा है।

राजनीतिक दलों में सहभागिता: भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी का एक प्रमुख स्वरूप राजनीतिक दलों में उनकी सक्रिय सहभागिता है। अनेक युवा विभिन्न राजनीतिक दलों के युवा संगठनों से जुड़कर संगठनात्मक कार्यों में योगदान देते हैं। वे चुनाव प्रचार, जनसंपर्क अभियान, सदस्यता विस्तार, जनसभाओं के आयोजन तथा सामाजिक कार्यक्रमों के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त युवा कार्यकर्ता स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक राजनीतिक नेतृत्व विकसित करने की प्रक्रिया में भी शामिल होते हैं। राजनीतिक दलों

में युवाओं की भागीदारी लोकतांत्रिक नेतृत्व के विकास तथा राजनीतिक व्यवस्था में नई सोच और ऊर्जा के समावेश के लिए आवश्यक मानी जाती है।

छात्र राजनीति: विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में छात्र राजनीति युवाओं के राजनीतिक प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। छात्र संघ चुनाव युवाओं को लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं, नेतृत्व कौशल, संगठन प्रबंधन तथा जनसंपर्क की व्यावहारिक समझ प्रदान करते हैं। छात्र राजनीति के माध्यम से युवा अपने शैक्षिक, सामाजिक एवं राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूक होते हैं तथा विभिन्न मुद्दों पर अपनी आवाज उठाना सीखते हैं। भारत के अनेक प्रमुख राजनीतिक नेताओं ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत छात्र राजनीति से ही की थी। इस प्रकार छात्र राजनीति युवाओं में नेतृत्व क्षमता विकसित करने और भविष्य के राजनीतिक नेतृत्व का आधार तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सामाजिक एवं जनआंदोलन: युवा वर्ग विभिन्न सामाजिक एवं जनआंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लेकर राजनीतिक परिवर्तन की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। पर्यावरण संरक्षण, भ्रष्टाचार उन्मूलन, लैंगिक समानता, मानवाधिकार, सामाजिक न्याय तथा शिक्षा सुधार जैसे मुद्दों पर युवाओं की भागीदारी विशेष रूप से देखने को मिलती है। अनेक बार युवाओं द्वारा संचालित आंदोलन राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक जनसमर्थन प्राप्त कर राजनीतिक और नीतिगत परिवर्तन का कारण बने हैं। सामाजिक आंदोलनों में युवाओं की सक्रियता यह दर्शाती है कि वे केवल सत्ता प्राप्ति की राजनीति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए भी प्रतिबद्ध हैं।

डिजिटल और सोशल मीडिया आधारित भागीदारी: सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने राजनीतिक भागीदारी के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने युवाओं को राजनीतिक अभिव्यक्ति का एक सशक्त मंच प्रदान किया है। फेसबुक, एक्स (पूर्व में ट्विटर), इंस्टाग्राम, यूट्यूब तथा अन्य डिजिटल माध्यमों के द्वारा युवा राजनीतिक विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करते हैं तथा जनमत निर्माण में योगदान देते हैं। ऑनलाइन अभियानों, डिजिटल याचिकाओं और सोशल मीडिया आंदोलनों के माध्यम से युवा अपनी राजनीतिक उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। डिजिटल भागीदारी ने राजनीति को अधिक संवादात्मक और जनसुलभ बनाया है, जिससे युवाओं की राजनीतिक सक्रियता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

3. भारतीय राजनीति में युवाओं की भूमिका

भारतीय राजनीति में युवाओं की भूमिका अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। युवा केवल राजनीतिक प्रक्रियाओं में भाग लेने वाले नागरिक नहीं हैं, बल्कि वे लोकतांत्रिक मूल्यों के संवाहक, सामाजिक परिवर्तन के प्रेरक तथा भविष्य के राजनीतिक नेतृत्व के निर्माता भी हैं। उनकी ऊर्जा, नवाचार क्षमता तथा परिवर्तनकारी दृष्टिकोण राजनीति को नई दिशा प्रदान करते हैं। वर्तमान समय में युवाओं की भूमिका केवल चुनावी राजनीति तक सीमित नहीं है, बल्कि नीति-निर्माण, सामाजिक जागरूकता, जनआंदोलनों और लोकतांत्रिक संस्थाओं को सुदृढ़ बनाने तक विस्तारित हो चुकी है।

राजनीतिक जागरूकता का प्रसार: युवा समाज में राजनीतिक चेतना और जागरूकता फैलाने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। वे विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक मुद्दों पर चर्चा, संवाद और जनसंपर्क के माध्यम से नागरिकों को जागरूक बनाते हैं। आधुनिक संचार माध्यमों और सोशल मीडिया के उपयोग से युवा राजनीतिक सूचनाओं का प्रसार करते हैं तथा लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में नागरिक सहभागिता को प्रोत्साहित करते हैं। राजनीतिक जागरूकता का यह प्रसार लोकतंत्र को अधिक सशक्त और उत्तरदायी बनाने में सहायक होता है।

लोकतांत्रिक मूल्यों का संरक्षण: लोकतंत्र की सफलता समानता, स्वतंत्रता, न्याय, सहिष्णुता और नागरिक अधिकारों जैसे मूल्यों पर आधारित होती है। युवा इन मूल्यों के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति विश्वास बनाए रखने, मानवाधिकारों की रक्षा करने तथा सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देने में सक्रिय योगदान देते हैं। लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति युवाओं की प्रतिबद्धता समाज में न्यायपूर्ण और उत्तरदायी शासन व्यवस्था की स्थापना में सहायक होती है।

नीति-निर्माण में योगदान: युवा वर्ग नई समस्याओं और चुनौतियों के समाधान हेतु नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। शिक्षा, रोजगार, पर्यावरण, डिजिटल प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य तथा सामाजिक विकास जैसे क्षेत्रों में युवाओं के विचार नीति-निर्माण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और समकालीन बनाते हैं। युवाओं की भागीदारी से नीतियाँ समाज की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप बन पाती हैं तथा शासन व्यवस्था अधिक जनोन्मुखी बनती है।

सामाजिक परिवर्तन के वाहक: युवा वर्ग सामाजिक परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम माना जाता है। वे सामाजिक कुरीतियों, भेदभाव, असमानता, भ्रष्टाचार तथा अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाकर समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करते हैं। विभिन्न सामाजिक आंदोलनों, जागरूकता अभियानों तथा जनहित गतिविधियों में उनकी सक्रिय भूमिका समाज को अधिक प्रगतिशील और लोकतांत्रिक बनाने में सहायक होती है। युवाओं की परिवर्तनकारी क्षमता राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में कार्य करती है।

4. भारतीय राजनीति में युवाओं के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

यद्यपि भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी निरंतर बढ़ रही है, फिर भी अनेक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा संस्थागत चुनौतियाँ उनकी प्रभावी सहभागिता में बाधा उत्पन्न करती हैं। इन चुनौतियों के कारण कई बार युवा राजनीति से दूर हो जाते हैं अथवा उनकी क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता। लोकतंत्र को अधिक सशक्त बनाने के लिए इन चुनौतियों को समझना और उनका समाधान करना आवश्यक है।

राजनीतिक उदासीनता: कई युवा राजनीति को भ्रष्ट, जटिल और अप्रभावी मानते हैं, जिसके कारण वे राजनीतिक गतिविधियों से दूरी बनाए रखते हैं। यह धारणा राजनीतिक उदासीनता को जन्म देती है, जिससे मतदान, राजनीतिक चर्चा और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में उनकी भागीदारी प्रभावित होती है। युवाओं की यह निष्क्रियता लोकतंत्र की गुणवत्ता के लिए एक गंभीर चुनौती है क्योंकि लोकतंत्र की सफलता सक्रिय नागरिक सहभागिता पर निर्भर करती है।

वंशवाद और परिवारवाद: भारतीय राजनीति में वंशवाद और परिवारवाद लंबे समय से एक महत्वपूर्ण समस्या रहे हैं। राजनीतिक परिवारों से जुड़े व्यक्तियों को नेतृत्व और चुनावी अवसर अपेक्षाकृत आसानी से प्राप्त हो जाते हैं, जबकि सामान्य पृष्ठभूमि के प्रतिभाशाली युवाओं को राजनीतिक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए अधिक संघर्ष करना पड़ता है। इससे राजनीति में समान अवसरों की अवधारणा प्रभावित होती है और अनेक योग्य युवा राजनीति में प्रवेश करने से हतोत्साहित होते हैं।

आर्थिक संसाधनों की कमी: चुनावी राजनीति और राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए पर्याप्त आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। अधिकांश युवा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं होते, जिसके कारण वे चुनाव लड़ने या बड़े स्तर पर राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने में कठिनाई महसूस करते हैं। राजनीति में बढ़ते चुनावी खर्च और संसाधनों की आवश्यकता युवाओं की सहभागिता को सीमित कर देती है।

बेरोजगारी और आर्थिक असुरक्षा: भारत में बेरोजगारी और आर्थिक असुरक्षा युवाओं की प्रमुख समस्याओं में से एक है। रोजगार और आजीविका की चिंता के कारण अधिकांश युवा राजनीतिक गतिविधियों की अपेक्षा अपने आर्थिक भविष्य को प्राथमिकता देते हैं। आर्थिक अस्थिरता राजनीतिक भागीदारी के लिए आवश्यक समय, संसाधन और ऊर्जा को प्रभावित करती है, जिससे युवाओं की सक्रियता सीमित हो जाती है।

राजनीतिक अपराधीकरण: राजनीति में अपराधी तत्वों की बढ़ती उपस्थिति लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए गंभीर चुनौती है। राजनीति में अपराध और हिंसा का प्रभाव देखकर अनेक युवा राजनीति को असुरक्षित और अनैतिक क्षेत्र मानने लगते हैं। इससे उनके राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने की इच्छा कमजोर पड़ती है तथा स्वस्थ राजनीतिक नेतृत्व के विकास में बाधा उत्पन्न होती है।

राजनीतिक शिक्षा का अभाव: विद्यालयों और महाविद्यालयों में राजनीतिक शिक्षा तथा नागरिक प्रशिक्षण की पर्याप्त व्यवस्था नहीं होने के कारण अनेक युवा लोकतांत्रिक संस्थाओं, संवैधानिक प्रक्रियाओं और शासन व्यवस्था के बारे में सीमित जानकारी रखते हैं। राजनीतिक जागरूकता और नागरिक शिक्षा के अभाव में युवाओं की राजनीतिक समझ कमजोर रह जाती है, जिससे उनकी प्रभावी भागीदारी प्रभावित होती है।

सोशल मीडिया की चुनौतियाँ: यद्यपि सोशल मीडिया युवाओं की राजनीतिक सहभागिता का एक प्रभावी माध्यम बन चुका है, लेकिन इसके साथ अनेक चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। फेक न्यूज, गलत सूचना, अफवाहें, घृणा भाषण, ट्रोलिंग तथा दुष्प्रचार जैसी समस्याएँ युवाओं की राजनीतिक सोच को प्रभावित कर सकती हैं। कई बार अपुष्ट सूचनाएँ और भ्रामक प्रचार लोकतांत्रिक विमर्श को कमजोर करते हैं तथा राजनीतिक ध्रुवीकरण को बढ़ावा देते हैं। इसलिए डिजिटल साक्षरता और तथ्य-जांच की संस्कृति को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है।

5. युवाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने के उपाय

भारतीय राजनीति में युवाओं की प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं—

1. विद्यालय एवं उच्च शिक्षा स्तर पर नागरिक एवं राजनीतिक शिक्षा को सुदृढ़ किया जाए।
2. राजनीतिक दलों में युवाओं को नेतृत्व के अधिक अवसर प्रदान किए जाएँ।
3. चुनावी प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और सुलभ बनाया जाए।
4. युवा नेतृत्व विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए।
5. सोशल मीडिया पर राजनीतिक साक्षरता एवं तथ्य-जांच को प्रोत्साहित किया जाए।
6. युवाओं के लिए राजनीतिक प्रशिक्षण एवं लोकतांत्रिक संवाद मंच विकसित किए जाएँ।
7. रोजगार और कौशल विकास के अवसर बढ़ाकर युवाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जाए।

6. निष्कर्ष

भारतीय लोकतंत्र के वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए युवाओं की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। युवा केवल लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भाग लेने वाले नागरिक नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक परिवर्तन, राजनीतिक सुधार, आर्थिक विकास तथा राष्ट्र निर्माण के प्रमुख वाहक भी हैं। भारत जैसे युवा बहुल देश में लोकतंत्र की सफलता काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि युवा वर्ग राजनीतिक प्रक्रियाओं में किस सीमा तक सक्रिय और सार्थक भूमिका निभाता है। उनकी ऊर्जा, रचनात्मकता, नवीन दृष्टिकोण तथा परिवर्तन की आकांक्षा राजनीतिक व्यवस्था को अधिक गतिशील और उत्तरदायी बनाने की क्षमता रखती है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी विभिन्न स्वरूपों में निरंतर बढ़ रही है। मतदान, छात्र राजनीति, राजनीतिक दलों में सहभागिता, सामाजिक आंदोलनों तथा डिजिटल माध्यमों के उपयोग ने युवाओं को लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं से अधिक निकटता से जोड़ा है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विकास ने राजनीतिक जागरूकता को व्यापक बनाया है, जिससे युवा वर्ग राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करने तथा जनमत निर्माण में सक्रिय योगदान देने लगा है। इसके परिणामस्वरूप लोकतांत्रिक संवाद अधिक व्यापक, समावेशी और सहभागितापूर्ण बना है।

युवाओं की राजनीतिक भूमिका केवल चुनावों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण, सामाजिक न्याय की स्थापना, नीति-निर्माण प्रक्रिया में योगदान तथा सामाजिक परिवर्तन को गति प्रदान करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान समय में शिक्षा, रोजगार, पर्यावरण संरक्षण, लैंगिक समानता, डिजिटल अधिकार, मानवाधिकार तथा सुशासन जैसे विषयों को राजनीतिक विमर्श के केंद्र में लाने में युवाओं का विशेष योगदान रहा है। इस प्रकार युवा वर्ग भारतीय लोकतंत्र को अधिक संवेदनशील, उत्तरदायी और विकासोन्मुख बनाने में सहायक सिद्ध हो रहा है। हालाँकि युवाओं की बढ़ती राजनीतिक सक्रियता के बावजूद अनेक चुनौतियाँ उनकी प्रभावी भागीदारी में बाधा उत्पन्न करती हैं। राजनीतिक उदासीनता, वंशवाद एवं परिवारवाद, आर्थिक संसाधनों की कमी, बेरोजगारी, राजनीतिक अपराधीकरण, राजनीतिक शिक्षा का अभाव तथा सोशल मीडिया पर फैलने वाली गलत सूचनाएँ ऐसी प्रमुख समस्याएँ हैं जो युवाओं की राजनीतिक क्षमता

के पूर्ण विकास को प्रभावित करती हैं। विशेष रूप से राजनीतिक संस्थाओं में युवाओं का सीमित प्रतिनिधित्व और निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं में उनकी कम भागीदारी लोकतांत्रिक समावेशन के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है।

इन चुनौतियों के समाधान के लिए बहुआयामी प्रयासों की आवश्यकता है। राजनीतिक दलों को युवाओं को नेतृत्व के अधिक अवसर प्रदान करने चाहिए तथा आंतरिक लोकतंत्र को मजबूत बनाना चाहिए। शैक्षणिक संस्थानों में नागरिक एवं राजनीतिक शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि युवाओं में लोकतांत्रिक मूल्यों और संवैधानिक प्रक्रियाओं के प्रति जागरूकता विकसित हो सके। इसके साथ ही रोजगार के अवसरों का विस्तार, राजनीतिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन तथा डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना भी आवश्यक है। लोकतांत्रिक संस्थाओं, सरकार, राजनीतिक दलों, शैक्षणिक संस्थानों और नागरिक समाज के संयुक्त प्रयासों से ही युवाओं की राजनीतिक सहभागिता को अधिक प्रभावी और सार्थक बनाया जा सकता है।

अंततः कहा जा सकता है कि युवा शक्ति भारत की सबसे महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक संपत्ति है। यदि युवाओं को पर्याप्त अवसर, प्रशिक्षण, प्रतिनिधित्व और प्रोत्साहन प्रदान किया जाए, तो वे भारतीय राजनीति को अधिक पारदर्शी, जवाबदेह, समावेशी तथा जनोन्मुखी बना सकते हैं। उनकी सक्रिय एवं सकारात्मक भागीदारी न केवल लोकतंत्र को सुदृढ़ करेगी, बल्कि सामाजिक न्याय, आर्थिक प्रगति और सतत विकास के राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति में भी महत्वपूर्ण योगदान देगी। इसलिए भारतीय लोकतंत्र के दीर्घकालिक सशक्तीकरण और राष्ट्र के समग्र विकास के लिए युवाओं की राजनीतिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना समय की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

संदर्भ (References)

1. कोठारी, रजनी. (2018). *भारतीय राजनीति.* नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
2. शर्मा, बी. एल. (2020). *भारतीय शासन एवं राजनीति.* जयपुर: कॉलेज बुक डिपो।
3. सिंह, एम. पी. एवं रॉय, रेखा. (2019). *Indian Political System*. नई दिल्ली: पियर्सन एजुकेशन।
4. यादव, योगेन्द्र. (2017). *भारतीय लोकतंत्र और चुनावी राजनीति.* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. जयाल, निरजा गोपाल. (2013). Citizenship and Its Discontents. नई दिल्ली: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. भार्गव, राजीव. (2019). *भारतीय संविधान और लोकतंत्र.* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. शाह, घनश्याम. (2018). Social Movements in India. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स।
8. हसन, जोया. (2012). *Politics and the State in India*. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स।
9. सिंह, योगेन्द्र. (2019). Modernization of Indian Tradition. जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स।
10. देशपांडे, सतीश. (2020). *Contemporary India: A Sociological View*. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।
11. चंद्रा, कंचन. (2016). Democratic Dynasties. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
12. कुमार, संजय. (2022). *Electoral Politics in India: The Resurgence of the Bharatiya Janata Party*. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
13. वर्मा, एस. पी. (2018). *भारतीय राजनीतिक व्यवस्था.* नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
14. भारत निर्वाचन आयोग. (2024). *मतदाता सहभागिता एवं जागरूकता रिपोर्ट.* नई दिल्ली: निर्वाचन आयोग।
15. भारत सरकार, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय. (2022). *राष्ट्रीय युवा नीति.* नई दिल्ली: भारत सरकार।
16. नीति आयोग. (2023). *India Youth Development Index Report*. नई दिल्ली: नीति आयोग।
17. लोकनीति-सीएसडीएस. (2024). *युवा मतदाता और भारतीय लोकतंत्र सर्वेक्षण रिपोर्ट.* नई दिल्ली।
18. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP). (2022). *Youth and Political Participation Report*. न्यूयॉर्क: UNDP.
19. यूनेस्को. (2023). *Global Citizenship Education Report*. पेरिस: UNESCO.
20. International IDEA. (2021). *Youth Participation in Democratic Processes*. स्टॉकहोम: International IDEA.

21. विश्व बैंक. (2023). *World Development Report: Youth and Development*. वाशिंगटन डी.सी.: World Bank.
22. Almond, Gabriel A., & Powell, G. B. (2015). *Comparative Politics: A Developmental Approach*. बोस्टन: लिटिल ब्राउन।
23. Verba, Sidney, Schlozman, Kay L., & Brady, Henry E. (2018). *Voice and Equality: Civic Voluntarism in American Politics*. कैम्ब्रिज: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
24. Ministry of Education, Government of India. (2023). *Higher Education and Youth Participation Report*. नई दिल्ली: भारत सरकार।
25. Jha, Praveen. (2021). *Political Economy of Youth Development in India*. नई दिल्ली: रूटलेज इंडिया।